प्रथम अध्यक्षता संदेश, जनवरी 2017

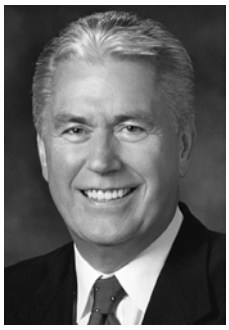

लक्ष्य केन्द्र की ओर करते हुए

अध्यक्ष टिएटर एफ. उक्टोफ द्वारा

प्रथम अध्यक्षता में दितीये सलाहाकार

हाल ही में, मैं तीरंदाजी की कला का अभ्यास करते हुए लोगों के एक समुह को देखा रहा था । देखने के द्वारा ही,मुझे यह साफ हो गया कि यदि आप सच में तीर और कमान में निपूर्ण होना चाहते है, यह समय और अभ्यास लेगा ।

मैं नहीं समझता आप एक खाली दीवार पर तीरंदाजी करके एक प्रतिष्ठा बना सकते हो और फिर तीर के लक्ष्य के ईर्द-गिर्द घेरा बनाते हो । आपको लक्ष्य ढुढ़कर और मछली की आंख में मरने की कला को सीखना होगा ।

लक्ष्यों को रंगना

पहले तीर चलना और बाद में लक्ष्य रेखांकित करना कुछ थोड़ा अजीब लगता है, परन्तु कभी कभी हम जीवन के अन्य परिस्थितियों में अलग अलग व्यवहार में अपने आप कोआईना दिखाते है ।

गिरजे के सदस्यों के रुप में,हमारे अन्दर एक कबिलियत होती है अपने आपको सुसमाचार कार्यक्रमों,मामलो, और यहाँ तक की सिंद्धान्तों से जोकि हमें रुचिकार,महत्वपूर्ण,या आनन्दप्रिये प्रतीत होते है बन्धें रखते हैं। हमें उसके चारो ओर लक्ष्य बनाने की लालसा होती है,हमेंसुसमाचार केन्द्र पर लक्ष्य बनाने का भरोसा दिलाया जाता है ।

ऐसा करना आसान है ।

युगों युगों तक परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं से हम अतिउतम सलाह और प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं । हम गिरजे के भिन्न भिन्न प्रकाशनो, हस्तपुस्तिकाओं, और सामग्रीयो से निर्देशन और स्पष्टीकरण भी प्राप्त करते हैं । हम आसानी से अपना प्रिय सुसमाचार विषय चुना कर, उसके चारों तरफ मछली की आँख बनाकर, और एक हालत बना सकते हैं कि हम सुसमाचार के केन्द्र को पहचाने ।

उद्धारकर्ता स्पष्ट करता है

हमारे दिन की यह अनोखी समस्य नहीं है । प्राचीनताह से, धार्मिक मार्गदर्शक बहुत समय व्यतीत करते थे सुचि बनाने,क्रम देने,और बेहस करने में हजारो की आज्ञाओं में कौन सी अति महत्वपूर्ण थी ।

एक दिन धार्मिक याजको के समुह ने उद्धारकर्ता को वादविवाद के घेरे में लेने की चेष्ठा की थी । उन्होंने उसे उस एक विषय पर परखने के लिये पूछाजिन पर कुछ की सहमती हो सकें ।

“हे गुरु,” उन्होंने उससे पूछा, “व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है ?”

हम सभी जानते है कैसे यीशु ने जवाब दिया थाः “तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख ।

“बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है ।

" और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख ।

" ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार हैं ।"

कृपाय आखिरी वाक्य पर ध्यान देः"ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार हैं ।"

उद्धारकर्ता ने न सिर्फ हमें लक्ष्य दिखाया, अपितु उसने मछली की आंख की पहचान भी दी ।

लक्ष्य पर निशाना साधना

गिरजा के सदस्य के रुप में, हम ने यीशु मसीह के नाम को अपने ऊपर लेने का अनुबंध बंधा है । उस अनुबंध में यह समझना अप्रत्यक्ष है कि हम परमेश्वर के विषय में सीखेंगें,उससे प्रेम करेंगे,उसमें अपना विश्वास बढ़ाएंगें,उसका आदर,उसके मार्ग में चलना, उसके प्रति साक्षी के रुप में दृढ़ता से खड़े रहने का प्रयत्न करेंगे ।

जितना अधिक हम परमेश्वर के विषय में सीखते और उसके प्रेम को अपने लिए महसूस करते है, हम और अधिक यीशु मसीह के अपार बलिदान को परमेश्वर का पवित्र उपहार समझते हैं । और परमेश्वर प्रेम हमें प्रभावित करता है पश्चाताप के सच्चे मार्ग का इस्तेमाल करने को, जो हमें क्षमादान के अद्भूत तरीके की ओर मार्गदर्शन करेंगा । यह प्रक्रिया हमें उनके प्रति जो हमारे आसपास है महान प्रेम और करुणाके लिये सक्षम करती है । हम चिन्हों से परे देखना सीखेंगे । हम दूसरों को उनके पापों,कमियों,खामियों, राजनिति झुकाव,धार्मिक धारणा,राष्ट्रवादों,या रंग भेदभाव से दोषी या न्याय करने के लालच से बच सकेंगे ।

हम हर एक–हमारे भाई या हमारी बहन को हमारे स्वर्गीय पिता के एक बच्चे के रुप में मिलेंगे ।

हम दूसरों तक समझदारी और प्रेम से पहुंचेगे–यहां तक उनसे जिन से प्रेम करना आसान नहीं हो सकता है । हम उसके साथ विलाप करेंगे जो विलाप करते है और तसल्ली उनको जिन्हें तसल्ली की आवश्यकता होगी ।

और हम जानेंगे कि हमें सुसमाचार के सही लक्ष्य के बारे में तड़पने की कोई आवश्यकता नहीं होगी ।

दो मुख्य आज्ञाएं लक्ष्य है ।ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार हैं ।

जैसे इसे हम ग्रहण करते है, अन्य सारी अच्छी चीज़े अपनी स्थान परहो जाएंगी ।

यदि हमारा प्राथामिक ध्यान, विचार, और प्रयत्न हमारे सर्वशाक्तिमान परमेश्वर के लिये हमारे प्रेम को बढ़ाने पर केन्द्रीत करता है और अपने हृदयों को दूसरो के प्रति बड़ाता है,हम जान सकते है कि हमने सही लक्ष्य को पा लिया है और मछली की आंख की ओर लक्ष्यसाधकर–यीशु मसीह के सच्चे शिष्य बनते हैं ।

टिपण्णीयां

1.मत्ती 22:36–40

2.देखेंमूसायाह 18:9

3.देखेंमत्ती 22:40

इस संदेश से सीखाएं

इस संदेश को बाँटने से पहले, आप "Our Savior's Love" (सुसंगीत,न.113) को गा सकते हैं । फिर उन को जिन से आप भेंट करते हैं उनके स्वंय के जीवनों के लक्ष्य पर प्रभाव डालने पर विचारे । आप तरीको पर चर्चा कर सुनिश्चत कर सकते है कि दो महान आज्ञाएं–"अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम कर" और "अपने समान अपने पड़ोसी से प्रेम कर"(देखेंमत्ती 22:37, 39)---हमेशा से उनके क्रिया का मार्गदर्शन करते है । आप विशेष तरीको से भी बांट सकते है जिस में आप अपने जीवन को मसीह पर केन्द्रीत कर और गवाही बांटे, की कैसे उसने आपको आशीषित किया है ।

युवा

एक मुस्कराहट फर्क लासकती है

अध्यक्ष उक्टोफ ने दो उदेश्य पहचाने है हमें उस पर काम करना चाहिएःपरमेश्वर से प्रेम और अपने सहभागियों से प्रेम करना । परन्तु कभी कभी यह दूसरों से प्रेम करना इतना आसान नहीं होता है । आप तमाम जीवनभर, जब आपकोकभी कभी लोगों से सम्पर्क करना कठीन लगता है–शायद किसी ने आपको चोट पहुंचाई हो या किसी से बात करने में या साथ में रहने में कठिनाई होती हो । इन लम्हों में,याद करने की कोशिश करें मित्र,परिवार,स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रेम को आपने महसूस किया था । याद करें उन परिस्थितीयों में आप ने आनन्द का एहसास किया था और कल्पना करें यदि ऐसे प्रेम की अनुभूति करना का अवसर सब को मिलें । स्मरण रखें हर कोई परमेश्वर के बेटे या बेटियां है और दोनों हाथों से उसका और आपका का प्रेम पाने के हकदार है ।

अपने जीवन में किसी एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचे जिस के साथ आप का रहना दूरलाभ हो । उनको अपनी प्रार्थना में शामिल करें और स्वर्गीय पिता से अपने दिलों को उनके लिये खोलने के लिये मागें । आप जल्द ही उन्हें देखेंगे कैसे वह करता हैःजैसे उसका एक बच्चा जो प्रेम पाने के योग्य है ।

आपकी प्रार्थना करने के पश्चात, उनके लिये कुछ अच्छा करे !उनको मेच्युल गतिविधि में या एक मित्रों के साथ बाहर जाने में आंमत्रित करें । गृहकार्य को साथ में करने के लिये मदद करें । यहां तक उन से “नमस्कार” कहे और मुस्कान दें । छोटी छोटी बातें बड़ा बदलाव ला सकती है ।...आप दोनों के जीवन में !

बच्चा

मच्छी की आंख !

अध्यक्ष उक्टोफ कहते है सुसमाचार लक्ष्य के अभ्यास के सामन है । हमें अति महत्वपूर्ण बातों के प्रति कामना करने की आवश्यकता है ।अति महत्वपूर्ण आज्ञाएं हैं परमेश्वर से प्रेम और दूसरों से प्रेम करना । यदि हम इन दो बातों पर ध्यान दें, हम हर वक्त मछली की आंख पर वार कर सकते हैं !

एक बड़े लक्ष्य को एक पृष्ट पर रेखाकिंत करें । अभिभावक को आप के लिये निम्न सूची पढ़ने दे । यदि सूची पर कोई भी एक विषय हो जो हमारी मदद परमेश्वर और दूसरो के प्रति प्रेम दिखाता हो, फिर आप लक्ष्य के मध्य में उसे लिखें या रेखाकिंत करें ।

अपने खिलौने बांटे

मिठाई चुराए

गिरजा जाएं

किसी को उपनाम से पुकारे

अपनी प्रार्थनाऐ कहें

किसी को गले लगाएं

अपने भाई-बहन से लड़ाई करें

© 2017 द्वाराIntellectual Reserve, Inc.सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतीः6/16 । अनुवाद अनुमतिः 6/16 ।प्रथम अध्यक्षता संदेश, जनवरी 2017 ।हिन्दी97921 294

सहायता संस्था का उदेश्य

विश्वास,परिवार, सहायता

प्रार्थनापूवर्क इस समाग्री का अध्ययन करें और क्या बांटना है की प्रेरणा के लिए खोजें ।

सहायता संस्था का उदेश्य है "स्त्रीयों को अनन्त जीवन की आशीषों के लिये तैयार करना," लिन्ड़ा के. बर्टान, सहायता संस्था की जनरल अध्यक्षता ने कहा है ।यह विश्वास,परिवार,और सहायता से आता है जिसे हम अपने "अत्यावश्यक कामों का भाग में" शामिल करते हैं ।

सहायता संस्था "एक स्थाई और आत्मिक कार्य है," कॅरोलएम. स्टीफन, सहायता संस्था की जनरल अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार कहती है । "यही कुछ महिलायें उद्धारकर्ता के दिन में किया करती थी, और यही सब हम भी लगातार करते है ।"

जैसे हम कुएं पर समारी स्त्री को देखें, जिस ने अपना पानी का मटका छोड़कर और दूसरों को बताने दौड़ी थी कि यीशु एक भविष्यवक्ता है (देखेंयूहन्ना 4:6–42), या फीबे को, जो जीवन भर दूसरों की खुशी--खुशी से सेवकाई करती रही (देखेंरोमियो 16:1–2), हम उद्धारकर्ता के दिनों में स्त्रीयों के उदहारण देखते है जिन्होंने सक्रियता से मसीह के पास आओ में कार्य किया था । यह वही है जिस ने हमारे अनन्त जीवन का मार्ग खोला है (देखेंयूहन्ना 3:16) ।

जैसे हम नाबू,इलानोएस, में पथपदर्शक बहनों को देखते हैं, जो सारा किंमबल के घर पर 1842 में अपनी स्वंय की संस्था बनाने के लिए इक्ट्ठी हुई थी, हम देखते है परमेश्वर की योजना सहायता संस्था को लाने में और पौरोहित्य के साथ रहने में । एलिजाआर. स्नो ने बाद में एक संविधान लिखा था, भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने उसकी समीक्षा की थी । उस ने जाना था कि गिरजा पूरी तरह से स्थापित नहीं होगा जबतक स्त्रीयों की स्थापन न होगी । उसने बोला कि प्रभु ने उसकी भेंट स्वीकार कर ली लेकिन वहां पर कुछ बेहतर था । "मैं पौरोहित्य के अन्तरगर्त पौरोहित्य तरीको के बाद स्त्रीयों की स्थापना करुगां," उसने कहा था ।

" सहायता संस्था न सिर्फ संसार में अच्छा करने की कोशिश करने वाला एक अन्य स्त्रीयों का समुह है । यह भिन्न था । यह कुछ बेहतर था क्योंकि इस की स्थापना पौरोहित्य अधिकार के अंर्तगत हुई थी । इस संस्था के कदम को उठाने कीआवश्यकता थीपरमेश्वर के काम को धरती पर करने के लिये ।"

अतिरिक्त धर्मशास्त्र और जानकारी

सिद्धान्त और अनुबंध 25:2–3, 10; 88:73; reliefsociety.lds.org

टिपण्णीयां

1.लिन्डाके. बर्टान, सारा जेन विवर में,"Relief Society Celebrates Birthday and More March 17," Church News, Mar. 13, 2015, news.lds.org.

2.LindaK. Burton, in Weaver, "Relief Society Celebrates Birthday."

3.CaroleM. Stephens, in Weaver, "Relief Society Celebrates Birthday."

4.Joseph Smith, inDaughters in My Kingdom: The History and Work of Relief Society(2011), 11–12.

5.Daughters in My Kingdom,16.

इसपर विचारे

कैसे सहायता संस्था स्त्रीयों की स्वर्गीय पिता के पवित्र भूमिका को उनके लिये पूरा करने में सहायता करती और उनको अनन्त जीवन की ओर अग्रसर करती है ?

© 2017द्वाराIntellectual Reserve, Inc.सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतीः6/16 । अनुवाद अनुमतिः 6/16 ।भेंट करने वाला शिक्षका संदेश, जनवरी 2017 ।हिन्दी97921 294